पवित्र क़ुरआन में यीशु और मरयिम की कहानी (3 का भाग 2): यीशु

रेटिंग:

विवरण:

श्रेणी: लेख तुलनात्मक धर्म मरयम

श्रेणी: लेख तुलनात्मक धर्म यीशु

श्रेणी: लेख इस्लाम की मान्यताएं पैगंबरों की कहानियां

द्वारा: IslamReligion.com

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

पैगंबर यीशु

"(हे मुसलमानो!) तुम सब कहो कि हमने ईश्वर पर विश्वास किया तथा उसपर जो (क़ुरआन) हमारी ओर उतारा गया और उसपर जो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याक़ूब तथा उनकी संतान की ओर उतारा गया और जो मूसा तथा ईसा को दिया गया तथा जो दूसरे पैगंबरो को, उनके पालनहार की ओर से दिया गया। हम इनमें से किसी के बीच अन्तर नहीं करते और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।" (क़ुरआन 2:136)

"(हे नबी!) हमने आपकी ओर वैसे ही वह्यी भेजी है, जैसे नूह़ और उसके पश्चात के पैगंबरो के पास भेजी और इब्राहीम, इस्माईल, इस्ह़ाक़, याक़ूब तथा उसकी संतान, ईसा, अय्यूब, यूनुस, हारून और सुलैमान के पास वह्यी भेजी और हमने दाऊद को ज़बूर प्रदान की थी।" (क़ुरआन 4:163)

"मरयम का पुत्र मसीह़ इसके सिवा कुछ नहीं कि वह एक दूत है, उससे पहले भी बहुत-से दूत हो चुके हैं, उसकी माँ सच्ची थी [1] दोनों भोजन करते थे।[2] आप देखें कि हम कैसे उनके लिए निशानियाँ (एकेश्वरवाद के लक्षण) उजागर कर रहे हैं, फिर देखिए कि वे कहाँ बहके जा रहे हैं?" (क़ुरआन 5:75)

"यीशु सिर्फ एक भक्त (दास) हैं जिसपर हमने उपकार किया तथा उसे इस्राईल की संतान के लिए एक आदर्श बनाया।" (क़ुरआन 43:59)

यीशु का संदेश

"फिर हमने उन पैगंबरो के पश्चात् मरयम के पुत्र यीशु को भेजा, उसे सच बताने वाला, जो उसके सामने तौरात थी तथा उसे इंजील प्रदान की, जिसमें मार्गदर्शन तथा प्रकाश है, उसे सच बताने वाली, जो उसके आगे तौरात थी तथा ईश्वर से डरने वालों के लिए सर्वथा मार्गदर्शन तथा शिक्षा थी।" (क़ुरआन 5:46)

"हे अहले किताब (ईसाईयो!) अपने धर्म में अधिकता न करो और ईश्वर पर केवल सत्य ही बोलो। मसीह् मरयम का पुत्र केवल ईश्वर का दूत और उसका शब्द है, जिसे (ईश्वर ने) मरयम की ओर डाल दिया तथा उसकी ओर से एक आत्मा है।[3] अतः, ईश्वर और उसके दूतों पर विश्वास करो और ये न कहो कि ईश्वर तीन हैं, इससे रुक जाओ, यही तुम्हारे लिए अच्छा है, इसके सिवा कुछ नहीं कि ईश्वर ही अकेला पूज्य है, वह इससे पवित्र है कि उसका कोई पुत्र हो, आकाशों तथा धरती में जो कुछ है, उसी का है और ईश्वर काम बनाने के लिए बहुत है। मसीह् कदापि ईश्वर का दास होने को अपमान नहीं समझता और न (ईश्वर के) समीपवर्ती स्वर्गदूत।[4] जो व्यक्ति उसकी वंदना को अपमान समझेगा तथा अभिमान करेगा, तो उन सभी को वह अपने पास एकत्र करेगा।" (क़ुरआन 4:171-172)

"ये मरयम का पुत्र यीशु है, यही सत्य बात है, जिसके विषय में लोग संदेह कर रहे हैं। ईश्वर का ये काम नहीं कि अपने लिए कोई संतान बनाये, वह पवित्र है! जब वह किसी कार्य का निर्णय करता है, तो उसके सिवा कुछ नहीं होता कि उसे आदेश दे किः "हो जा" और वह हो जाता है।[5] और (ईसा ने कहाः) वास्तव में, ईश्वर मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है, अतः, उसी की वंदना करो, यही सुपथ (सीधी राह) है। फिर सम्प्रदायों ने आपस में विभेद किया, तो विनाश है उनके लिए, जो अविश्वासी है, एक बड़े दिन के आ जाने के कारण। (क़ुरआन 19:34-37)

"और जब आ गया यीशु खुली निशानियां लेकर, तो कहाः मैं लाया हूं तुम्हारे पास ज्ञान और ताकि उजागर कर दूं तुम्हारे लिए वह कुछ बातें, जिनमें तुम विभेद कर रहे हो। अतः, ईश्वर से डरो और मेरा ही कहा मानो। वास्तव में, ईश्वर ही मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है। अतः, उसी की वंदना करो, यही सीधी राह है। फिर विभेद कर लिया गिरोहों ने आपस में। तो विनाश है उनके लिए जिन्होंने अत्याचार किया, दुःखदायी दिन की यातना से। (क़ुरआन 43:63-65)

"तथा याद करो जब कहा मरयम के पुत्र यीशु नेः हे इस्राईल की संतान! मैं तुम्हारी ओर दूत हूं और पुष्टि करने वाला हूं उस तौरात की जो मुझसे पूर्व आयी है तथा शुभ सूचना देने वाला हूं एक दूत की, जो आयेगा मेरे पश्चात्, जिसका नाम अह्मद है।[6] फिर जब वह आ गये उनके पास खुले प्रमाणों को लेकर, तो उन्होंने कह दिया कि ये तो खुला जादू है।"[7] (क़ुरआन 61:6)

यीशु के चमत्कार

"मरयम ने उस (शिशु) की ओर संकेत किया। लोगों ने कहाः हम कैसे उससे बात करें, जो गोद में पड़ा हुआ एक शिशु है? वह (शिशु) बोल पड़ाः मैं ईश्वर का भक्त हूं। उसने मुझे पुस्तक (इन्जील) प्रदान की है तथा मुझे पैगंबर बनाया है। [8] तथा मुझे शुभ बनाया है, जहां रहूं और मुझे आदेश दिया है प्रार्थना तथा दान का, जब तक जीवित रहूं। तथा आपनी माँ का सेवक बनाया है और उसने मुझे क्रूर तथा अभागा नहीं बनाया है। तथा शान्ति है मुझपर, जिस दिन मैंने जन्म लिया, जिस दिन मरूंगा और जिस दिन पुनः जीवित किया जाऊंगा।" (क़ुरआन 19:29-33)

('नवजात शिशु की खुशखबरी' के तहत और भी चमत्कारों का जिक्र किया गया है)

ईश्वर की अनुमति से स्वर्ग से भोजन मंगाना

"जब शिष्यों ने कहाः हे मरयम के पुत्र यीशु! क्या तेरा पालनहार ये कर सकता है कि हमपर आकाश से थाल उतार दे? यीशु ने कहाः तुम ईश्वर से डरो, यदि तुम वास्तव में विश्वास करने वाले हो। उन्होंने कहाः हम चाहते हैं कि उसमें से खायें और हमारे दिलों को संतोष हो जाये तथा हमें विश्वास हो जाये कि तूने हमें जो कुछ बताया है, सच है और हम उसके साक्षियों में से हो जायें। मरयम के पुत्र यीशु ने प्रार्थना कीः हे ईश्वर, हमारे पालनहार! हमपर आकाश से एक थाल उतार दे, जो हमारे तथा हमारे पश्चात् के लोगों के लिए उत्सव (का दिन) बन जाये तथा तेरी ओर से एक चिन्ह निशानी। तथा हमें जीविका प्रदान कर, तू उत्तम जीविका प्रदाता है। ईश्वर ने कहाः मैं तुमपर उसे उतारने वाला हूं, फिर उसके पश्चात् भी जो अविश्वास करेगा, तो मैं निश्चय उसे दण्ड दूंगा, ऐसा दण्ड कि संसार वासियों में से किसी को, वैसी दण्ड नहीं दूंगा।" (क़ुरआन 5:112-115)

यीशु और उसके शिष्य

"हे विश्वास करने वालो! तुम बन जाओ ईश्वर के धर्म के सहायक, जैसे मरयम के पुत्र यीशु ने शिष्यों से कहा था कि कौन मेरा सहायक है ईश्वर के धर्म के प्रचार में? तो शिष्यों ने कहाः हम हैं

ईश्वर के धर्म के सहायक। तो विश्वास किया इस्राईलियों के एक समूह ने और अविश्वास किया दूसरे समूह ने। तो हमने समर्थन दिया उनको, जिन्होंने विश्वास किया उनके शत्रु के विरुध्द, तो वही विजयी रहे।[9] (क़ुरआन 61:14)

" तथा जब मैंने तेरे शिष्यों के दिलों में ये बात डाल दी कि मुझपर तथा मेरे दूत (यीशु) पर विश्वास करो, तो सबने कहा कि हमने विश्वास किया और तू साक्षी रह कि हम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।" (क़ुरआन 5:111)

"फिर हमने, निरन्तर उनके पश्चात् अपने दूत भेजे और उनके पश्चात् भेजा मरयम के पुत्र यीशु को तथा प्रदान की उसे इन्जील और कर दिया उसका अनुसरण करने वालों के दिलों में करुणा तथा दया और संसार त्याग को उन्होंने स्वयं बना लिया, हमने नहीं अनिवार्य किया उसे उनके ऊपर। परन्तु ईश्वर की प्रसन्नता के लिए (उन्होंने ऐसा किया), तो उन्होंने नहीं किया उसका पूर्ण पालन। फिर भी हमने प्रदान किया उन्हें जिन्होंने विश्वास किया उनमें से उनका बदला और उनमें से अधिकतर अवज्ञाकारी हैं। हे लोगो जो विश्वास करते हो! ईश्वर से डरो और ईमान लाओ उसके दूत पर, वह तुम्हें प्रदान करेगा दुगुना प्रतिफल अपनी दया से तथा प्रदान करेगा तुम्हें ऐसा प्रकाश, जिसके साथ तुम चलोगे तथा क्षमा कर देगा तुम्हें और ईश्वरअति क्षमी, दयावान् है। ताकि ज्ञान हो जाये इन बातों से ईसाइयों को कि वह कुछ शक्ति नहीं रखते ईश्वर के अनुग्रह पर और ये कि अनुग्रह ईश्वर ही के हाथ में है। वह प्रदान करता है, जिसे चाहे और ईश्वर बड़े अनुग्रह वाला है।"[10] (क़ुरआन 57:27-29)

फुटनोट:

[1] यहाँ अरबी शब्द विश्वास के उच्चतम स्तर को इंगित करता है, जहाँ केवल एक उच्च है पैगंबरी।

[2] मसीह और उसकी धर्मपरायण माँ दोनों खाते थे, और यह ईश्वर की विशेषता नहीं है, जो न खाता है और न ही पीता है। साथ ही, जो खाता है व शौच करता है, और यह ईश्वर का गुण नहीं हो सकता। यहाँ यीशु की तुलना उन सभी महान दूतों से की गई है जो उससे पहले आए थे: उनका संदेश एक ही था, और ईश्वर के गैर-ईश्वरीय प्राणियों के रूप में उनकी स्थिति समान है। मनुष्य को दिया जा सकने वाला सर्वोच्च सम्मान पैगंबरी है, और यीशु पाँच उच्च सम्मानित पैगंबरों में से एक है। छंद 33:7 और 42:13 देखें

[3] यीशु को ईश्वर की ओर से एक शब्द या आत्मा कहा जाता है क्योंकि वह तब बनाया गया था जब ईश्वर ने कहा, "हो जा" और वह हो गया। उसमें वह विशेष है, क्योंकि आदम और हव्वा को छोड़कर सभी मनुष्यों को दो माता-पिता से बनाया गया है। लेकिन अपनी विशिष्टता के बावजूद, यीशु बाकी सभी की तरह है कि वह दिव्य नहीं है, बल्कि एक नश्वर प्राणी है।

[4] ईश्वर के अलावा सब कुछ और हर कोई ईश्वर का उपासक या दास है। पद इस बात पर जोर दे रहा है कि मसीह कभी भी ईश्वर के उपास
से ऊपर की स्थिति का दावा नहीं करेगा, अपनी दिव्यता के विपरीत किसी भी दावे को खारिज कर देगा और वास्तव में वह इस तरह की स्थि
का कभी भी तिरस्कार नहीं करेगा, क्योंकि यह सर्वोच्च सम्मान है, जिसकी कोई भी मानव आकांक्षा कर सकता है।

[5] यदि बिना पिता के यीशु की रचना उसे ईश्वर का पुत्र बनाती है, तो बिना किसी पूर्ववर्ती के यीशु की तरह बनाई गई हर चीज भी दिव्य होनी
चाहिए, और इसमें आदम, हव्वा, पहले जानवर, और यह पूरी पृथ्वी अपने पहाड़ों और पानी के साथ शामिल है। लेकिन यीशु को इस पृथ्वी पर
सभी चीजों की तरह बनाया गया था, जब ईश्वर ने कहा, "हो जा" और वह हो गया।

[6] यह पैगंबर मुहम्मद का दूसरा नाम है।

[7] यह पैगंबर यीशु और मुहम्मद ("उन पर शांति हो") दोनों का उल्लेख कर सकता है। जब वे अपने लोगों के लिए ईश्वर का संदेश लेकर आए,
उन पर जादू लाने का आरोप लगाया गया।

[8] पैगंबर सर्वोच्च और सबसे सम्मानजनक पद है जिस तक मनुष्य पहुँच सकता है। एक पैगंबर वह होता है जो स्वर्गदूत जिब्रिईल के माध्यम
से ईश्वर से रहस्योद्घाटन प्राप्त करता है। एक दूत एक पैगंबर है जो ईश्वर से एक किताब प्राप्त करता है, साथ ही साथ अपने लोगों को
बताने के लिए कानून भी प्राप्त करता है। यीशु ने एक पैगंबर और दूत दोनों बनकर सर्वोच्च सम्मान प्राप्त किया।

[9] इमान वालों की जीत इस्लाम के संदेश के माध्यम से हुई, और यह एक शारीरिक और आध्यात्मिक जीत थी। इस्लाम ने जीसस के बारे में सभ
संदेहों को दूर कर दिया और उनकी भविष्यवाणी के निर्णायक सबूत पेश किए, और वह आध्यात्मिक जीत थी। इस्लाम भौतिक रूप से भी
फैला, जिसने ईसा के संदेश में विश्वासियों को अपने शत्रु के विरुद्ध शरण और शक्ति प्रदान की, और वह भौतिक विजय थी।

[10] पृष्ठभूमि और जाति की परवाह किए बिना, ईश्वर जिसे चाहता है, उसे मार्गदर्शन देता है। और जब लोग विश्वास करते हैं, तो ईश्वर उनक
आदर करता है और सब से ऊँचा उठाता है। लेकिन जब वे इनकार करते हैं, तो ईश्वर उन्हें पदावनत कर देता है, भले ही वे सम्माननीय हों।

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/hi/articles/622

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2024 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।